श्री राम स्तुति

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन
हरण भव भय दारुणम्।
नवकंजलोचन, कंज-मुख
कर-कंज पद-कंजारुणम्॥

कंदर्प अगणित अमित छबि,
नवनील-नीरद-सुंदरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि-शुचि
नौमि जनक सुता-वरम्॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव
दैत्य वंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद
दशरथ-नंदनम्॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु
उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर
संग्राम-जित-खर-दूषणम्॥

इति वदति तुलसीदास शंकर
शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु
कामादि-खल-दल-गंजनम्॥

1

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप

व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज

इंस्टाग्राम प्रोफाइल